

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 20

जोनाह

चतुर्थ. जोनाह

ए. जोनाह का नाम और लेखक

आइए रोमन अंक IV और A, "जोना का नाम और लेखक" को देखें। पुस्तक का नाम अमितताई के पुत्र योना के नाम पर रखा गया है। यदि आप योना 1:1 को देखें तो आप वहां पढ़ते हैं, "प्रभु का संदेश अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुंचा।" 2 राजा 14:25 में कहा गया है कि इसी नाम का एक भविष्यवक्ता उत्तरी साम्राज्य में नाज़रेथ के उत्तर में स्थित गथ हेफ़र नामक स्थान से आया था। मैं उस पाठ 2 राजा 14:25 को देखना चाहता हूं क्योंकि यह एक अन्य संबंध में महत्वपूर्ण है। यहां आप यारोबाम द्वितीय के बारे में पढ़ते हैं, "वही वह व्यक्ति था जिसने इस्राएल के यहोवा के वचन के अनुसार लेबो हमात से लेकर अराबा के सागर तक इस्राएल की सीमाओं को पुनर्स्थापित किया था, जो उसके सेवक अमितताई के पुत्र योना, जो गत के भविष्यवक्ता थे, के द्वारा कहा गया था। हेफ़र।" इसलिए, योना की भविष्यवाणी के अनुसार, यारोबाम द्वितीय ने इज़राइल की सीमाओं को उत्तर की ओर और अराबा सागर, मृत सागर तक बढ़ा दिया। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि यारोबाम द्वितीय के समय अमित्तै का पुत्र योना वही है जो योना की पुस्तक का लेखक है। तो, 2 राजा 14:25 में इसी नाम के भविष्यवक्ता को गत हेपेर से आने वाला बताया गया है। इस संदर्भ के अनुसार वह यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले आया होगा। यदि यह यारोबाम के समय का था, तो वह आमोस और होशे का समकालीन था। उसने भविष्यवाणी की कि यारोबाम उत्तर में हमात से लेकर दक्षिण में अराबा सागर तक की प्राचीन सीमाओं को पुनः प्राप्त करेगा। इसके अलावा हम किताब में बताई गई बातों के अलावा योना के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।

अब हम नीनवे जाने के उसके मिशन और ऐसा करने की उसकी इच्छा की कमी, मछली द्वारा उसे निगलने और अंततः नीनवे जाने की कहानी पर आते हैं। पुस्तक का लेखक निर्दिष्ट नहीं है, लेकिन यह मानने का कोई ठोस कारण नहीं है कि योना लेखक नहीं था। हालाँकि, यह जोड़ा जाना चाहिए, यदि पुस्तक योना के अलावा किसी अन्य द्वारा लिखी गई थी, तो यह किसी भी तरह से

इसकी प्रामाणिकता को प्रभावित नहीं करता है क्योंकि लेखक निर्दिष्ट नहीं है।

बी. पुस्तक की प्रकृति: ऐतिहासिक या गैर-ऐतिहासिक - दृष्टिकोण का सर्वेक्षण

बी. इस पुस्तक को कैसे समझा जाए, इसकी चर्चा है, "पुस्तक की प्रकृति: ऐतिहासिक या गैर-ऐतिहासिक।" यह काफी चर्चित मुद्दा बन गया है. तो चलिए इस पर नजर डालते हैं. यह पुस्तक स्वयं को अन्य छोटे भविष्यवक्ताओं से बहुत अलग करती है। इसकी सामग्री सिर्फ योना की भविष्यवाणियों का रिकॉर्ड नहीं है, बल्कि यह एक कथा है जिसमें पैगंबर एक केंद्रीय व्यक्ति है। इस संबंध में यह एलिजा और एलीशा से जुड़ी कहानियों से अधिक समानता रखता है; यह राजाओं की कथा के एक अंश की तरह है। कथा के चरित्र के संबंध में दृष्टिकोण में व्यापक विविधता है। इसके धार्मिक मूल्य को लगभग सभी लोग पहचानते हैं, जबकि इसके ऐतिहासिक मूल्य की अक्सर कमी मानी जाती है। चूँकि यह पुस्तक उन लोगों द्वारा उद्धृत की जाने वाली पहली पुस्तक में से एक है, जिन्होंने बाइबिल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को चुनौती दी है, इसलिए हमें इस पर कुछ विस्तार से विचार करना चाहिए।

ऐसा कहा जाता है कि जब लेखक ने यह कहानी लिखी तो उसके मन में एक उपदेशात्मक उद्देश्य था, कि उसने यह कहानी कुछ बातें सिखाने के लिए कही थी। इस आधार से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस कहानी का उद्देश्य ऐतिहासिक जानकारी देना नहीं है, बल्कि कुछ पाठ पढ़ाना है और लेखक इस उपदेशात्मक उद्देश्य को पूरा करने के लिए कहानी के रूप का उपयोग करता है। यह आम तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता है कि उपदेशात्मक इतिहास के साथ-साथ उपदेशात्मक कथा साहित्य जैसी भी कोई चीज़ हो सकती है।

एस ई टीडी अलेक्जेंडर "जोना और शैली," यह आपकी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 17 में है। यदि आप इस विषय में रुचि रखते हैं तो हम इस लेख को देख सकते हैं। यह काफी अच्छा लेख है. लेकिन इसमें अलेक्जेंडर सर्वेक्षण करते हुए कहते हैं कि जोनाह को किस तरह से वर्गीकृत किया गया है और उसके साथ कौन सा लेबल जोड़ा गया है। उनका कहना है कि आंशिक सर्वेक्षण से भी विभिन्न प्रकार के प्रस्तावों का पता चलता है, और वह इनमें से प्रत्येक लेबल को फुटनोट करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह इतिहास है, कुछ रूपक, कुछ मिद्राश, कुछ दृष्टांत, कुछ भविष्यसूचक दृष्टांत,

कुछ किंवदंती, कुछ भविष्यसूचक कथा, कुछ उपन्यास, कुछ उपदेशात्मक कथा, कुछ व्यंग्य, कुछ लघु कथा, और सूची बढ़ती चली जाती है। दूसरे शब्दों में, यदि आप उन लोगों को देखें जो इस पुस्तक के साथ काम करते हैं और एक शैली वर्गीकरण बनाने का प्रयास करते हैं, तो आपको संभावनाओं की यह लंबी सूची मिलती है।

अलेक्जेंडर स्वयं इसे उपदेशात्मक इतिहास या ऐसे इतिहास के रूप में वर्गीकृत करते हैं जिसका उद्देश्य कुछ सिखाना है। गैर-ऐतिहासिक समूह के बीच इसकी प्रकृति के संबंध में दृष्टिकोण में मतभेद हैं। सबसे आम हैं कल्पना, किंवदंती, रूपक और दृष्टान्त। अलेक्जेंडर देखें, पृष्ठ 36 और 37।

गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण

1. जोना कथा, किंवदंती, रूपक और दृष्टान्त के रूप में

तो आइए उनमें से प्रत्येक पर नजर डालें। एक, कल्पना. कुछ लोग सोचते हैं कि लेखक ने कहानी को गद्य कथा के रूप में चाहा था। दो, किंवदंती. अन्य लोग सोचते हैं कि लेखक ने एक भविष्यसूचक किंवदंती का उपयोग किया था जो इज़राइल के लोगों के बीच प्रचलन में थी। यह दृष्टिकोण स्वीकार करता है कि इस कहानी के पीछे एक वास्तविक ऐतिहासिक कर्नेल हो सकता है। शायद योना नाम का कोई व्यक्ति वास्तव में नीनवे गया था। शायद एक शाही संदेश या यहाँ तक कि एक धार्मिक संदेश भी, लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों का यह मूल मूल सभी प्रकार के पौराणिक विस्तारों और अभिवृद्धियों से घिरा हुआ है, जिन्हें जोड़ा गया था, जैसे कि मछली की कहानी। मैं उन तीन चीजों को कह सकता हूँ: मछली, लौकी और नीनवे के लोगों का धर्मांतरण आम तौर पर लोगों को सबसे अधिक परेशानी का कारण बनता है, क्योंकि ये ऐसी चीजें हैं जो अक्सर इसकी ऐतिहासिकता पर सवाल उठाती हैं। कुछ अभिव्यक्तियों में, विशेष रूप से मछली की कहानी के साथ, कुछ को समुद्री राक्षसों से मुक्ति की किंवदंतियों जैसे गैर-इजरायल के साथ सहमति का बिंदु मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि लेखक ने इस पौराणिक मूल भाव का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए किया है, जिसमें अन्यजातियों के प्रति ईश्वर की दया, और योना के विद्रोह और ईश्वर की इच्छा को पूरा करने से इनकार करने जैसे चीजों की शिक्षा शामिल है। उस प्रकार की चीजें सिखाई जाती

हैं, इससे उन लोगों द्वारा इनकार नहीं किया जाता है जो कहानी को वास्तव में ऐतिहासिक मानते हैं। सवाल यह है कि फिर हम किस आधार पर कह सकते हैं कि यह ऐतिहासिक नहीं है? ऐसे दृष्टिकोण के निहितार्थ क्या हैं?

पुस्तक की ऐतिहासिक घटनाओं को नकारने वालों में तीसरा दृष्टिकोण रूपक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण का सबसे सामान्य रूप योना को इज़राइल के लोगों के रूप में देखना है, नौवें बृहस्पति दुनिया है जिसके लिए इज़राइल के पास पश्चाताप का संदेश घोषित करने का कार्य था। योना की बेवफाई इस्राएल की गैर-यहूदियों के लिए रोशनी बनने की बेवफाई है। मछली द्वारा निगल लिया गया योना इस्राएल की बन्धुवाई है, योना का भूमि पर फेंक दिया जाना इस्राएल की बन्धुवाई से लौटना है। इज़राइल की वापसी का उद्देश्य अन्यजातियों को धार्मिक सच्चाई से अवगत कराना है और वे धर्म परिवर्तन के माध्यम से ईश्वर की कृपा के प्राप्तकर्ता बन जाते हैं। अन्यजातियों के प्रति प्रभु की दया पर असंतोष के कारण इस्राएल को अस्वीकार किया जाना है। ये रूपक दृष्टिकोण की सामान्य पंक्तियाँ हैं।

चौथी श्रेणी दृष्टान्त दृश्य है। अन्य लोग रूपक तत्वों को इतना प्रमुख नहीं बनाएंगे, बल्कि कहानी को कुछ सबक सिखाने के लिए आविष्कृत दृष्टान्त के रूप में देखेंगे। ऐसा दृष्टिकोण आवश्यक रूप से कहानी की दैवीय प्रेरणा को नकारेगा नहीं बल्कि इसकी ऐतिहासिकता को नकारने को तैयार होगा। अब इसका एक उदाहरण एनआईसीओटी कमेंटरी में लेस्ली एलन है। यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 41 पैराग्राफ 2 में देखें, तो जोएल, जोनाह और मीका की पुस्तकों पर लेस्ली एलन की टिप्पणी का एक पैराग्राफ है, जहां एलन कहते हैं, "लंबे समय तक जोनाह की पुस्तक की व्याख्या दृढ़ता से ऐतिहासिक तरीके से की गई थी। फिर भी हालांकि चर्च के फादर, जो ज्यादातर जोनाह को प्रतीकात्मक रूप से इस्तेमाल करते थे, ने इसकी ऐतिहासिकता को स्वीकार किया, ऐसे लोग भी थे जिन्होंने इस पर संदेह किया, जिनमें चौथी शताब्दी में नाज़ियानज़स के ग्रेगरी भी शामिल थे... लूथर ने कहानी को गैर-ऐतिहासिक माना। मुझे यकीन नहीं है कि उसे वह कहां से मिला क्योंकि वहां कोई फुटनोट नहीं है।" आज रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों मंडल हैं जो पुस्तक की ऐतिहासिकता को उत्साह के साथ बनाए रखते हैं जो मानते हैं कि इसकी प्रेरणा और अधिकार इस पर निर्भर करते हैं: यदि जोनाह की पुस्तक इतिहास है, तो यह सबसे महत्वपूर्ण सत्य

के साक्ष्य का हिस्सा है कल्पना करने योग्य, अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्यों को पश्चाताप की ओर ले जाना चाहता है और जो वास्तव में पश्चाताप करते हैं उन्हें क्षमा कर देगा।" कोई और है जो उस विचार को दबा रहा है। यहाँ एलन की टिप्पणी है, "लेकिन अगर किताब ऐतिहासिक नहीं है, तो यह केवल कुछ विलक्षण रूप से व्यापक सोच वाले यहूदियों की राय है कि भगवान को अन्यजातियों को भी क्षमा करना चाहिए यदि वे वास्तव में पश्चाताप करते हैं।" लेकिन क्या यह समझ से बाहर है कि "कुछ विलक्षण रूप से व्यापक विचारधारा वाले यहूदी" थे इस अति-आवश्यक पाठ को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया? इस तरह का दृष्टिकोण ईश्वर की आत्मा को प्रतिबंधित करने और वास्तविक शास्त्रीय माध्यम के रूप में दृष्टांत के मूल्य को कम करने के खतरे में है। मेरे लिए वह वास्तव में सवाल पूछता है: क्या यह एक दृष्टांत है? ऐसा क्यों होगा आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह एक दृष्टांत है? और इसका क्या मतलब है? निश्चित रूप से, भगवान किसी को दृष्टान्त बताने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। लेकिन क्या यह यही है?

गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर टिप्पणियाँ अब जोना के अपने हैंडआउट पर वापस जाएँ, मैं चाहता हूँ पहले गैर-ऐतिहासिक विचारों पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करें। बाद में अगले पृष्ठ पर मैं गैर-ऐतिहासिक विचारों पर कुछ और विशिष्ट टिप्पणियाँ करूँगा। लेकिन सबसे पहले इसमें शामिल सामान्य व्यापक मुद्दे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि इसके लिए पर्याप्त आधार नहीं है इन गैर-ऐतिहासिक विचारों का सत्यापन और उन्हें अस्वीकार करने के कुछ मजबूत कारण। मैंने यहां तीन कारण सूचीबद्ध किये हैं।

एक। पुस्तक स्वयं का दावा है कि यह ऐतिहासिक है

एक, किताब स्वयं बताती है कि इसे ऐतिहासिक के अलावा किसी अन्य चीज़ के रूप में लेने का कोई अच्छा कारण नहीं है, जब तक कि चमत्कारी की उपस्थिति को उसके खिलाफ सबूत के रूप में नहीं माना जाता है। निश्चित रूप से, इसमें चमत्कारी का एक मजबूत तत्व है। यदि चमत्कारों की संभावना कोई मुद्दा नहीं थी तो पुस्तक स्वयं ऐतिहासिक के अलावा कुछ भी मानने का कोई अच्छा कारण नहीं देती है। 2 राजा 14:25 में कथा में अग्रणी व्यक्तित्व का संदर्भ योना नामक

भविष्यवक्ता के लिए ऐतिहासिकता का एक ठोस आधार प्रदान करता है। देखिए, यहीं पर 2 राजा 14:25 काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि हमारे पास केवल योना की पुस्तक होती तो हमें आश्चर्य होता कि क्या यह एक दृष्टांत है। हम जानते हैं कि योना एक भविष्यवक्ता था जिसने यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले भविष्यवाणी की थी।

बी। यीशु ने इसे ऐतिहासिक समझा - मैथ्यू 12:38-41 दो, मैथ्यू 12:38-41 में योना की पुस्तक में घटनाओं के बारे में यीशु के संदर्भ इस बात के सूचक हैं कि उन्होंने इसे ऐतिहासिक समझा। आइए मत्ती 12:38-41 को देखें। “तब कुछ फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से कहा, हे गुरु, हम तुझ से एक चमत्कारी चिन्ह देखना चाहते हैं। उसने उत्तर दिया, 'दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चमत्कार का चिन्ह मांगती है! परन्तु योना भविष्यवक्ता के चिन्ह को छोड़ किसी को यह न दिया जाएगा। क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा।" अब अधिकांश लोग जो यीशु के इस कथन को ध्यान में रखते हैं योना की पुस्तक से और इस ऐतिहासिक मुद्दे पर चर्चा करते हुए इसे श्लोक 40 से जोड़ें, "जैसे योना तीन दिन तक पेट में रहा, वैसे ही मैं भी तीन दिन तक पृथ्वी के भीतर रहूंगा।" मुझे ऐसा लगता है कि तर्क यहीं खत्म नहीं होता। यह छंद 41 से 42 के साथ है, ध्यान दें कि यीशु आगे क्या कहते हैं, “नीनवे के लोग न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और इसकी निंदा करेंगे; क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश से पश्चात्ताप किया, और अब एक योना से भी महान यहाँ है. दक्षिण की रानी न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ उठेगी और इसकी निंदा करेगी; क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी के छोर से आई थी, और अब सुलैमान से भी बड़ा एक यहाँ है।" अब ध्यान दें कि यीशु वहाँ छंद 41 और 42 के साथ क्या करते हैं। यीशु योना की ऐतिहासिकता को उसी स्तर पर रखते हैं जिस स्तर पर योना की ऐतिहासिकता है। शीबा की रानी . वह नीनवे के लोगों की प्रतिक्रिया को अपने समय के लोगों की प्रतिक्रिया के समान स्तर पर रखता है। दूसरे शब्दों में, जब योना उन्हें उपदेश देने आया तो नीनवे के लोगों ने पश्चात्ताप किया। तुम पश्चात्ताप नहीं कर रहे हो और मैं योना से भी बड़ा हूँ। वहाँ एक ऐतिहासिक सादृश्य है. यदि नीनवे के लोगों ने योना के उपदेश पर ऐतिहासिक रूप से पश्चात्ताप नहीं किया, तो सादृश्य विफल हो जाता है। यह मान लिया गया है

कि ये चीजें हुईं। यीशु इसका उपयोग अपनी ही पीढ़ी के लोगों की निंदा करने के लिए कर रहे हैं।

अब देखें कि एलन इस बारे में क्या कहता है, एलन कहते हैं, " फिर भी मैथ्यू 12:39-41 में योना के बारे में यीशु का बयान हमारी किताब की ऐतिहासिकता का प्रमाण नहीं है? वॉन ओरेली, जिन्होंने खुद इस कहानी की व्याख्या की, ने स्वीकार किया: 'यह वास्तव में निर्णायक आवश्यकता के साथ साबित नहीं हुआ है कि, यदि यीशु का पुनरुत्थान एक भौतिक तथ्य था, तो मछली के पेट में योना का निवास भी उतना ही ऐतिहासिक होना चाहिए। "लेकिन देखिए, यह वास्तव में तर्क का सार नहीं है। " इस संबंध में एक विशेषता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है जो योना के संकेत पर बाद के खंड में दिखाया जाएगा, कि यह सख्त व्याख्या नहीं है जो योना और मछली की कथा के यीशु के उपयोग में परिलक्षित होती है, बल्कि लोकप्रिय है यहूदी समझ, जिसे प्रभु ने अपनाया और अपने संबंध में सत्य के साधन के रूप में नियोजित किया। यदि ऐसा है, तो यह बनाए रखना काफी संभव है कि उनका संदर्भ ओटी के छात्र के लिए आवश्यक रूप से समर्थन किए बिना केवल समकालीन दृष्टिकोण को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, लोगों का मानना था कि योना ऐतिहासिक था और इसलिए यीशु उन शब्दों में बोलता है जैसे कि यह था लेकिन ऐसा नहीं था। " इसके अलावा, यीशु की शिक्षा में एक आलंकारिक तत्व के लिए अनुमति दी जानी चाहिए, एक ऐसा तत्व जिसे पश्चिमी साहित्यकारों को समझने में कुख्यात कठिनाई हुई है। यदि एक आधुनिक उपदेशक ने लेडी मैकबेथ या ओलिवर ट्विस्ट के संदर्भ में अपनी मंडली को चुनौती दी तो वह दोषी नहीं होगा, क्या यीशु अपने विशिष्ट संदेश को सुदृढ़ करने के लिए एक प्रसिद्ध कहानी का उसी तरह उल्लेख नहीं कर सकते थे? "अब मुझे लगता है कि एलन वास्तव में मुद्दे को भूल गया है। ऐसा नहीं है कि यीशु कहते हैं कि योना तीन दिन तक मछली के पेट में था और मछली ने उसे निगल लिया। नीनवे के लोगों द्वारा योना के उपदेश पर पश्चाताप का एक ऐतिहासिक संदर्भ भी है और यह उसके अपने समय के लोगों के पश्चाताप की कमी के विपरीत है जब वे अपना उपदेश सुनते हैं।

जीसी आल्डर की छोटी किताब, *द प्रॉब्लम ऑफ द बुक ऑफ जोनाह* को देखें। वह कहते हैं, " अंत में, और यह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं निस्संदेह योना की पुस्तक में वर्णित घटनाओं को वास्तव में ऐतिहासिक माना है। यह न केवल इस तथ्य से प्रकट होता है कि वह योना के व्हेल के पेट में रहने का संकेत देता है, बल्कि नीनवे के पश्चाताप के संदर्भ में भी:

नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय करने के लिए उठेंगे, और निंदा करेंगे यह: क्योंकि उन्होंने योना का उपदेश सुनकर मन फिराया, और देखो, यहां योना से भी बड़ा कोई है।' हमारे प्रभु तब तक इतनी गंभीर घोषणा नहीं कर सकते थे जब तक कि उन्हें दृढ़ता से विश्वास न हो जाए कि नीनवे के लोगों ने वास्तव में योना के उपदेश पर पश्चाताप किया था। मसीह की इस जोरदार चेतावनी के प्रकाश में इस पश्चाताप की एक परवलयिक व्याख्या बिल्कुल असंभव है।

“अब यह कई टिप्पणीकारों के लिए बहुत मायने नहीं रखता है, लेकिन यह हमारे लिए सब कुछ है जो उसे हमारे अनमोल उद्धारकर्ता, पिता के पुत्र, उसकी मानवता में दोषरहित मानते हैं। और शायद इसका उन लोगों के लिए कुछ मतलब हो सकता है जो इस विश्वास को साझा करते हैं, लेकिन पुराने नियम को भगवान के अचूक, आधिकारिक शब्द के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करने में हमारे साथ पूरी तरह से सहमत नहीं हैं। मुझे लगता है कि एल्डर का बयान एलन जैसी स्थिति के खिलाफ प्रतिक्रिया को बढ़ाता है।

आप अपनी रूपरेखा में देखते हैं कि चार्ल्स हैरिस कहते हैं, " यह सच है कि एक उपदेशक काल्पनिक या रूपक व्यक्तियों के चित्रण का हवाला दे सकता है, लेकिन उसे उन्हें अनुरूप साक्ष्य के रूप में उद्धृत नहीं करना चाहिए। उसे अविश्वासियों के सामने यह प्रयास करने दीजिए और वह उन्हें बुदबुदाते हुए पाएगा, 'इससे कुछ भी साबित नहीं होता, यह बात कभी हुई ही नहीं।' "देखिए, मुझे ऐसा लगता है कि यही इसका सार है। यीशु इसे एक सादृश्य के रूप में उपयोग करते हैं और यदि पश्चाताप की कोई ऐतिहासिक वास्तविकता नहीं है तो यह सादृश्य विफल हो जाता है। डिलार्ड और लॉन्गमैन, *ओल्ड टेस्टामेंट के* अपने परिचय, पृष्ठ 392-393 में टिप्पणी करते हैं, "ऐतिहासिक पढ़ने के पक्ष में सबसे सम्मोहक तर्क यह है कि योना और नीनवे के लिए यीशु का संदर्भ इंगित करता है कि उनका मानना है कि पुस्तक ऐतिहासिक थी। हालाँकि, टिप्पणी यह है कि हालांकि यह संभव है, यह निश्चित नहीं है। आखिरकार, यदि यीशु उपदेश दे रहे होते तो वे उस घटना का उल्लेख कर सकते थे, भले ही वह दृष्टान्त ही क्यों न हो। इसी तरह से आज एक उपदेशक मण्डली को अच्छे सामरी की तरह बनने के लिए प्रोत्साहित करता है, भले ही कुछ लोग मानते हैं कि अच्छा सामरी एक ऐतिहासिक व्यक्ति था। अच्छे सामरी का नाम नहीं है, योना का नाम है। राजाओं में हम जानते हैं कि वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था जो यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले रहता था।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि सादृश्य यह मानता है कि यह दृष्टान्त हो सकता है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि यह उस ऐतिहासिक सादृश्य की माँगों के अनुरूप है जो यीशु अपने वक्तव्य में कह रहे थे। तो यह गैर-ऐतिहासिक विचारों पर दूसरी सामान्य टिप्पणी है।

सी। पवित्रशास्त्र के कैनन में योना का समावेश

तीसरा, योना को पवित्रशास्त्र के सिद्धांत में शामिल करना और यहूदी साहित्य में इसके सबसे प्राचीन संदर्भों से पता चलता है कि इसे हमेशा ऐतिहासिक समझा जाता था। अपने उद्धरणों पर जाएँ, पृष्ठ 42—मेरे पास एचएल एलिसन का एक अधिक लंबा उद्धरण है, जो कहता है, " वास्तव में जो मायने रखता है वह पुस्तक की ऐतिहासिकता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहूदी परंपरा में इसके शाब्दिक सत्य पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। वास्तव में, अलेक्जेंड्रिया के फिलो, रूपक के महान गुरु, जो निस्संदेह किसी प्रतीकात्मक या रूपक व्याख्या को उत्सुकता से पकड़ लेते, यदि उन्हें पता होता, 'मछली के चमत्कार को समझाने के लिए उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा।'

“ समान रूप से पुस्तक की प्रामाणिकता पर कभी भी सवाल नहीं उठाया गया है। चाहे आधुनिक विद्वान पुस्तक को भविष्यसूचक कथा, प्रतीकात्मक कथा या उपदेशात्मक कथा के रूप में समझाए, उसे यह समझाने की असंभवता का सामना करना पड़ता है कि यहूदी लोग और विशेष रूप से हमारे प्रभु, इसे ऐतिहासिक रूप से सत्य कैसे मानते थे। कठिनाई तब और अधिक बढ़ जाती है जब हमें यह एहसास होता है कि ऐतिहासिक रूप से सच्चे विवरण के रूप में इसकी हमारी आध्यात्मिक व्याख्या, अधिक या कम हद तक, उससे काफी भिन्न होगी जो हमें देनी चाहिए, अगर हम इसे काल्पनिक मानते हैं। हमें यह विश्वास करने के लिए कहा जाता है कि यहूदी न केवल भूल गए कि यह कल्पना थी, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ भी भूल गए। यह याद रखना भी अनुचित नहीं है कि आधुनिक लोग इसके मूल उद्देश्य और अर्थ को लेकर एकमत हैं।

“ फिर जो लोग पुस्तक के तथ्यात्मक सत्य को नकारते हैं, उन्हें यह समझाने का दायित्व उठाना चाहिए कि अन्य भविष्यसूचक पुस्तकों से इतनी भिन्न पुस्तक को भविष्यसूचक सिद्धांत में कैसे शामिल किया गया, यह कैसे भुला दिया गया कि यह प्रतीकात्मक या उपदेशात्मक कल्पना थी, और इससे भी ऊपर हमारे भगवान इसके वास्तविक स्वरूप को समझने में कैसे असमर्थ थे।

“आइए हम एक साधारण तथ्य का सामना करें। आइचोर्न के बाद से पुस्तक की ऐतिहासिकता का खंडन सबसे पहले दुनिया के तत्कालीन प्रमुख तर्कसंगत दृष्टिकोण का परिणाम था, जिसमें चमत्कार के लिए या भौतिक चीजों में दैवीय हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं थी।

“हालाँकि, रूढ़िवादी को कुछ हद तक दोष वहन करना होगा। उनके लिए, अक्सर, किताब का पहला भाग ही मायने रखता है। उन्होंने इस बात को नज़रअंदाज कर दिया है कि योना के साथ भगवान के चमत्कारी व्यवहार दिव्य चरित्र के रहस्योद्घाटन की तैयारी के अलावा थे। यदि हम चाहते हैं कि पुस्तक के शाब्दिक सत्य को गंभीरता से लिया जाए तो हमें इसकी पर्याप्त आध्यात्मिक व्याख्या करनी होगी और इसमें अन्य चमत्कारी तत्वों को उचित ठहराना होगा। दूसरे शब्दों में, यदि आप केवल ऐतिहासिक विवरणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो आप पुस्तक के वास्तविक महत्व से चूक सकते हैं।

4. यहूदी की राय - उन्होंने इसे एक दृष्टांत के रूप में नहीं माना, आपके हैंडआउट्स के पृष्ठ 4 के शीर्ष पर पृष्ठ 39 पर आपके उद्धरण का एक और संदर्भ है, इस बाद वाले बिंदु पर एल्डर्स की टिप्पणी से, एल्डर्स के पैराग्राफ 2 जब वह बात कर रहे हैं यहूदी लोगों ने पुस्तक को किस प्रकार समझा। उन्होंने कहा, " यहूदियों की भी यही राय थी. उन्होंने योना की पुस्तक को एक दृष्टान्त के रूप में नहीं माना, बल्कि इसे वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं का अभिलेख माना। यह टोबिट की अपोक्रीफल पुस्तक से स्पष्ट है। जैसे ही टोबीत मर रहा था, उसने अपने बेटे, टोबियास को बुलाया, और उसे मीडिया में जाने का आदेश दिया, 'क्योंकि (वह कहता है) मैं नीनवे पर भगवान के वचन पर विश्वास करता हूँ, जो नहूम ने कहा था, कि वे सभी चीजें होंगी, और अश्शूर पर आ पड़ेंगी और नीनवे।' यह पाठ शायद सही है, लेकिन सेप्टुआजेंट में नहूम के बजाय योना है। यह एक गलत संशोधन हो सकता है, लेकिन यह साबित करता है कि यहूदियों ने निश्चित रूप से योना की पुस्तक को एक दृष्टान्त के रूप में नहीं माना था। मैकाबीज़ की तीसरी किताब में पुजारी एलीआजर प्रार्थना करते समय योना के उद्धार का उल्लेख इस प्रकार करता है: 'और जब योना समुद्र में जन्मे राक्षस के पेट में निर्दयी होकर मर रहा था, तो हे पिता, तूने उसे उसके सभी प्राणियों के लिए बिना किसी चोट के बहाल कर दिया। परिवार।' यह संदर्भ फिरौन की ऐसी ही यादों से पहले आता है जो अपने

अभिमानी मेजबान के साथ डूब गया था, सन्हेरीब की, जो पवित्र शहर की दृष्टि में हार गया था, आग की भट्टी से तीन दोस्तों की मुक्ति की, और डैनियल की शेरों से मुक्ति की ' मांद. इसी तरह यह इस बात का भी पुख्ता सबूत है कि यहूदी योना की किताब को वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं का रिकॉर्ड मानते हैं। और जोसेफस, जो बार-बार अपने काम के ऐतिहासिक चरित्र पर जोर देता है, पुस्तक की सामग्री को अपनी पुरावशेषों में शामिल करता है। यद्यपि हमारे पास उसकी ऐतिहासिक सटीकता के वास्तविक मूल्य पर सवाल उठाने का अच्छा कारण हो सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अपने लोगों के दृष्टिकोण को व्यक्त करता है, कि योना एक ऐतिहासिक कथा थी। तो ये गैर-ऐतिहासिक विचारों पर सामान्य टिप्पणियाँ हैं। मुझे लगता है कि गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अस्वीकार करने के ये तीन मजबूत कारण हैं।

वानॉय का गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण का विश्लेषण अब हम अधिक विशिष्ट टिप्पणियों पर आते हैं। मुझे सबसे पहले लगता है कि जो लोग गैर-ऐतिहासिक विचार रखते हैं वे आम तौर पर दो कारणों से ऐसा करते हैं। पहला, ए, यह है कि "वर्णित घटनाओं को या तो असंभव या असंभव के रूप में देखा जाता है।" दूसरे शब्दों में, पुस्तक की ऐतिहासिकता को उसमें निहित चमत्कारी तत्वों के आधार पर नकार दिया गया है। कुछ लोगों का मानना है कि चमत्कार नहीं होते, इसलिए उनकी रिपोर्टें ऐतिहासिक नहीं हो सकतीं। अन्य लोग सामान्यतः चमत्कारी को स्वीकार करने को तैयार हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि योना में चमत्कारी तत्व का गुणन इतना अधिक है कि इसे ऐतिहासिक न मानना ही बेहतर है। एलन अपनी एनआईसीओटी टिप्पणी में मूलतः यही कहते हैं। एलन कहते हैं, " आश्चर्य का यह तत्व पूरी किताब में एक महत्वपूर्ण कारक है। एक भविष्यवक्ता का अपना संदेश देने के लिए नीनवे की यात्रा करना एक असाधारण घटना है। राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियां आम बात हैं, लेकिन वे आम तौर पर पैगंबर की मूल भूमि पर उनके साथी नागरिकों के लाभ के लिए बोली जाती थीं। एलिजा और एलीशा का दमिश्क का राजनीतिक मिशन निकटतम समानांतर है, लेकिन योना की यात्रा एक अलग प्रकृति की है। " इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि भविष्यवक्ता दूसरे राष्ट्र में जा रहे हैं। " एक और आश्चर्य, चौंकाने वाला, योना द्वारा अपने भविष्यसूचक बोझ को उठाने से इनकार करना है। मूसा, एलिय्याह और यिर्मयाह वास्तव में अपने कार्यों से पीछे हट गए,

लेकिन योना का स्पष्ट इनकार उनकी हिचकिचाहट से कहीं अधिक है। वास्तव में यह छोटी सी किताब आश्चर्यों की एक श्रृंखला है; यह एक के बाद एक रोंगटे खड़े कर देने वाली और आंखें चौंधिया देने वाली घटनाओं से भरा हुआ है। हिंसक समुद्री तूफ़ान, पनडुब्बी जैसी मछली जिसमें योना बच जाता है क्योंकि वह एक गीत लिखता है, नीनवे का सामूहिक रूपांतरण, जादू का पौधा - ये ओटी भविष्यवाणी कथाओं की सामान्य विशेषताएं नहीं हैं। हालाँकि एक या दो रोमांचक घटनाओं से कोई सवाल नहीं उठता, लेकिन उत्तेजक तरीके से पाठक पर एक के बाद एक आश्चर्य की बमबारी से पता चलता है कि लेखक का इरादा केवल ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन करने के अलावा कुछ और है। ” तो यह अपने आप में चमत्कारी नहीं है, लेकिन “यह आंखों को चौंका देने वाली घटना का संचय है” जो आपको आश्चर्यचकित करता है कि क्या यह वास्तव में ऐतिहासिक रूप से पढ़ने का इरादा है। “ वह व्यक्ति साहसी होगा जिसने यह कहने का साहस किया कि घटनाओं की यह श्रृंखला असंभव थी, क्योंकि कौन ईश्वर की सर्वशक्तिमानता को सीमित कर सकता है और स्पष्ट रूप से कह सकता है कि कुछ भी नहीं हो सकता है? यह असंभव तो नहीं लेकिन असंभव है कि वे सामान्य पाठक पर किस तरह प्रभाव डालते हैं। क्या होगा यदि लेखक का इरादा हमारा ध्यान आकर्षित करने और उसे असंभवताओं की एक श्रृंखला के माध्यम से अपने संदेश पर केंद्रित करने का था? ” तो इस तरह एलन उस मुद्दे को संबोधित करता है।

जॉन स्टेक का दृष्टिकोण: इतिहास की सादृश्यता, एलन के उस प्रकार के दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के लिए जॉन स्टेक के एक लेख के इस कथन को देखें। वह कई वर्षों तक पुराने नियम के प्रोफेसर थे, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन उन्होंने *द मेसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ जोना* नामक पुस्तक लिखी, जो मुझे लगता है कि पुस्तक की ऐतिहासिकता के इस प्रश्न के लिए बहुत उपयोगी है, लेकिन साथ ही जोना की पुस्तक का संदेश भी है। लेकिन ध्यान दें कि स्टेक क्या कहता है, वह कहता है, “ लेखक वर्णित घटनाओं की ऐतिहासिकता को मानता है। यह एक धारणा है जिसे अधिकांश पाठक... दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करने के इच्छुक हैं। इस आख्यान को अपने अनूठे विहित और ऐतिहासिक संदर्भ से उठाकर, और सचेत रूप से या अनजाने में इसे सामान्य इतिहास के संदर्भ में पढ़ना, जहां यहां बताए गए चमत्कार, मिथकों, किंवदंतियों और परियों की कहानियों

को छोड़कर, नहीं होते हैं, आधुनिक पाठक और विद्वान इतिहास की सादृश्यता से इस कथा के लिए कुछ स्पष्टीकरण खोजने के लिए बाध्य महसूस करते हैं, सिवाय इसके कि वर्णित घटनाएँ वास्तव में घटित हुई थीं। देखें कि "इतिहास की सादृश्यता" का संदर्भ वह सिद्धांत है जिसका उपयोग अक्सर ऐतिहासिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है: यदि आप अपने अनुभव में अनुरूप घटनाएं नहीं ढूंढ पाते हैं तो एक समस्या है। स्टेक जो कह रहा है उसका सिद्धांत यह है कि जो पाठक ऐसा करते हैं वे इसे अपने स्वयं के संदर्भ से बाहर ले जाते हैं, मुक्तिदायक इतिहास के संदर्भ में जिसमें भगवान काम कर रहे हैं, और इसे सामान्य इतिहास के दूसरे संदर्भ में रखते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐसा नहीं हुआ ऐसा नहीं होता. वह कहते हैं, " इतिहास की सादृश्यता के सिद्धांत को लागू करते हुए, आम तौर पर सहारा लिया जाता है, जैसा कि ईसफेल्ट ने किया है, "एक पौराणिक, परी-कथा रूपांकन जो दुनिया भर में पाया जाता है, अर्थात् एक आदमी द्वारा निगलने और उल्टी करने का रूपांकन एक महान मछली, उदाहरण के लिए, पर्सियस गाथा के एक रूप में जानी जाती है।

“ यहाँ चित्रित विधि कपटपूर्ण है। इसका तात्पर्य है, यदि निरंतरता एक गुण है, तो एक अद्भुत घटना की प्रत्येक बाइबिल कथा के साथ भी ऐसा ही किया जाना चाहिए। घातक परिणाम यह है कि बाइबिल के सभी चमत्कारों की व्याख्या इतिहास की सादृश्यता के सिद्धांत पर की जाती है।

"वर्तमान लेखक ऐतिहासिक सादृश्य के सिद्धांत की वैधता को पहचानता है, लेकिन इस बात पर जोर देता है कि योना की पुस्तक में दर्ज अद्भुत घटनाओं के लिए एकमात्र उपयुक्त ऐतिहासिक एनालॉग मोक्ष के उस इतिहास से संबंधित समान रूप से अद्भुत घटनाएं हैं जिनके लिए बाइबिल के लेखक गवाह हैं, अर्थात्, भगवान के शक्तिशाली कार्यों का इतिहास। योना की पुस्तक को पढ़ने के लिए यही एकमात्र उचित संदर्भ है। इस संदर्भ में, ऐतिहासिक आख्यान ऐतिहासिकता को गंभीरता से लेता है, यहां तक कि सबसे असामान्य घटनाओं का वर्णन करते समय भी - ठीक इसलिए क्योंकि वर्णन करने के लिए असामान्य घटनाएं होती हैं। और बाइबिल साहित्य के भीतर, योना की पुस्तक भविष्यसूचक ऐतिहासिक कथा में साहित्य के रूप में अपनी निकटतम सादृश्यता पाती है, जैसा कि अधिकांश विद्वान स्वीकार करेंगे। दूसरे शब्दों में, आप पुराने नियम के ऐतिहासिक साहित्य, निर्गमन की कहानी और राजाओं की पुस्तक की कहानियों में निकटतम सादृश्य पाते हैं।

नीनवे के पश्चाताप पर सवाल उठाया गया फिर अगला पैराग्राफ एक फुटनोट है, 35, जहां स्टेक कहते हैं, " नीनवे के पश्चाताप की रिपोर्ट को अक्सर इस भविष्यवाणी पुस्तक के पौराणिक चरित्र के प्रमाण के रूप में अपील की गई है। एचएच राउली इसे स्पष्ट रूप से कहते हैं: 'नीनवे को तुरंत परिवर्तित कर दिया गया था, यह एक थीसिस है जो उसके इतिहास के किसी भी छात्र को आश्चस्त नहीं करेगी, जब तक कि रूपांतरण उतना ही अल्पकालिक न हो जितना तेज था - जिस स्थिति में यह बेकार था, और शायद ही धोखा देने की संभावना थी भगवान .' यदि वर्तमान लेखक योना की पुस्तक के उद्देश्य की सही व्याख्या करता है, तो नीनवे के लोगों की ओर से एक 'क्षणिक' पश्चाताप भगवान के उद्देश्य के लिए पर्याप्त था। इस तरह के पश्चाताप के लिए भी, जो पहले से ही प्रकट होना शुरू हो गया था जब योना का नीनवे में उपदेश मुश्किल से शुरू हुआ था - 'और योना एक दिन की यात्रा के लिए शहर में प्रवेश करने लगा' (3: 4) - इज़राइल की निर्दयी बर्खास्तगी और चमत्कार के बिल्कुल विपरीत है एलिजा और एलीशा की भरी हुई सेवकाई। भविष्यवाणी की चेतावनी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया से, भले ही वह क्षणिक रही हो, नीनवे के लोगों ने कठोर हृदय वाले इसराइल को शर्मसार कर दिया, " मुझे लगता है कि यह वही बात है जो यीशु कह रहे हैं। नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया, फिर भी योना से भी महान एक यहाँ है और आप पश्चाताप नहीं कर रहे हैं।

इस्राएलियों ने एलिय्याह और एलीशा की सेवकाई पर पश्चाताप नहीं किया और नीनवे के लोगों ने वैसी प्रतिक्रिया दी जैसी इस्राएल को मिलनी चाहिए थी। " इसके अलावा, यह कि ईश्वर एक क्षणिक पश्चाताप के प्रति भी दयालुता से प्रतिक्रिया करता है, इसका प्रमाण अहाब को बख्शने से मिलता है, जिसने एलिय्याह की आसन्न न्याय की धमकी के जवाब में उसी प्रकार प्रकट किया जो केवल एक अल्पकालिक पश्चाताप हो सकता था। " तुम्हें याद है जब अहाब ने पश्चाताप किया या अपने बेटे पर आने वाले फैसले को स्थगित कर दिया।

एकाधिक चमत्कार समस्या यदि आप एलन और अन्य लोगों की दिशा में जा रहे हैं, जो कहते हैं कि यह इस लघु कहानी के चमत्कारी तत्वों का गुणन है जो आपको इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि लेखक इतिहास का वर्णन करने का इरादा नहीं रखता है, तो आपको यह समझना होगा ये चीज़ें

अन्यत्र भी घटित होती हैं। फिर आप 2 राजाओं अध्याय 4-7 के साथ क्या करते हैं? 2 किंग्स 4-7 में, आपके पास 4 अध्याय हैं। योना में आपके पास 4 अध्याय हैं। 2 राजा 4-7 में, 4:1-7 में, ऋण चुकाने के लिए भविष्यवक्ताओं की मंडली के एक सदस्य की पत्नी के उन घड़ों में तेल कई गुना बढ़ाया जाता है। 4:8-37 में एलीशा ने शुन्नामी स्त्री को एक पुत्र देने का वादा किया और बाद में उसे मृतकों में से जीवित कर दिया। 4:8-34 में एलीशा भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों के लिए भोजन को शुद्ध और बढ़ाता है। अध्याय 5 में एलीशा नामान को ठीक करता है। अध्याय 6 में एक कुल्हाड़ी तैराई गई है। अध्याय 6:8 में इस्राएल के कुछ लोग अंधेपन से पीड़ित थे। 6:24 से 7:20 में उसने घेराबंदी के दौरान सामरिया की मुक्ति की भविष्यवाणी की। तो मुझे लगता है कि आप जो कह सकते हैं वह यह है कि जब आप 2 राजाओं की कहानियों पर जाते हैं तो आपके पास 4 अध्याय होते हैं जिनमें समान रूप से "आँखें-चौंका देने वाली" चमत्कारी घटनाएँ होती हैं, अगर यह आपको यह कहने के लिए प्रेरित करेगा, "जोना की किताब ऐतिहासिक नहीं है।" मुझे ऐसा लगता है, निरंतरता के कारण आपको यह कहना चाहिए कि 2 किंग्स 4-7 भी एक भविष्यसूचक कथा है। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं तो फिर आप वहां से कहां जाते हैं? क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि जिस तरह का साहित्य आपको योना में मिलता है, उसी तरह का साहित्य आपको 2 किंग्स 4-7 में मिलता है। मैं यह नहीं समझता कि आप 2 किंग्स 4-7 को ऐतिहासिक कैसे मान सकते हैं, लेकिन फिर कह सकते हैं, लेकिन मैं जोना को स्वीकार नहीं कर सकता, या इसके विपरीत। तो मुझे ऐसा लगता है, सवाल यह नहीं है कि कोई क्या सोचता है कि यह संभव या संभावित है। बल्कि बात यह है कि यहाँ लेखक वास्तविकता का वैसा वर्णन करने का इरादा रखता है या नहीं जैसा वह जानता है। ऐसा हुआ या नहीं, इसके बारे में लेखक की मंशा क्या है? चमत्कारी घटनाओं को शामिल करना, भले ही ये घटनाएँ त्वरित अनुक्रम में दर्ज की गई हों, इसकी ऐतिहासिकता के विरुद्ध एक वैध मानदंड नहीं है।

जैसा कि सी.एस. लुईस कहते हैं, हम अब पलायन की ओर वापस जाते हैं, “ अब निश्चित रूप से हमें ऐसा करना ही होगा
हयूम से सहमत हूँ कि यदि चमत्कारों के विरुद्ध बिल्कुल 'समान अनुभव' है, यदि दूसरे शब्दों में वे कभी घटित नहीं हुए, तो फिर वे कभी क्यों नहीं हुए। दुर्भाग्य से, हम उनके खिलाफ अनुभव को एक

समान तभी जानते हैं जब हम जानते हैं कि उनके बारे में सभी रिपोर्टें झूठी हैं। और हम सभी रिपोर्टों को तभी झूठा मानते हैं जब हम पहले से ही जानते हों कि चमत्कार कभी नहीं हुआ है। दरअसल, हम एक दायरे में बहस कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आखिरकार हमें विश्वदृष्टि के इस प्रश्न पर वापस धकेल दिया जाता है और आप दैवीय हस्तक्षेप की संभावना को स्वीकार करने के इच्छुक हैं या नहीं। तो यह इस पर थोड़ा और विस्तृत नज़र है।

मछली की कहानी और प्राचीन समुद्री राक्षस

मैंने कहा है कि आम तौर पर दो कारणों से गैर-ऐतिहासिक विचार होते हैं। पहला चमत्कारी होगा। दूसरा कारण यह है कि मछली की कहानी को अन्य लोगों के मिथकों और किंवदंतियों से लिया गया माना जाता है। इसके बाद जब आप व्युत्पत्ति के साक्ष्यों की जांच करेंगे तो मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि योना की कहानी और अन्य कहानियों के बीच बहुत अधिक मेल नहीं है। अधिकांश समानताएँ किसी के समुद्री राक्षस के पेट से बचाए जाने के विचार में पाई जाती हैं। ग्रीक साहित्य में ट्रोजन राजा की बेटी हेसियोन को देवताओं को खुश करने के लिए एक समुद्री राक्षस को दे दिया गया था लेकिन हरक्यूलिस ने उसे बचा लिया था। लेकिन हरक्यूलिस को इनाम नहीं दिया गया। ग्रीक साहित्य में भी, पर्सियस ने एक युवती को समुद्री राक्षस से बचाया और उससे शादी की। हेरोडोटस एरियन के बारे में बताता है, जिसे एक समुद्री राक्षस से बाहर निकाला गया था और डॉल्फ़िन ने बचाया था।

पृष्ठ 41 पर आल्डर्स की टिप्पणियों के लिए अपने उद्धरण पृष्ठ 41 पर जाएं। वह कहते हैं, “ एक तीसरा तर्क जिसे त्याग दिया जाना चाहिए वह है समानताओं पर आधारित, विशेष रूप से मछली की कहानी पर। कई विद्वान गैर-बाइबिल स्रोतों से समानताएँ एकत्र करने में लगे हुए हैं। बार-बार यह दावा किया गया है कि लेखक ने अपनी कहानी लिखने के लिए प्राचीन मिथकों और लोक कथाओं का उपयोग किया है। हालाँकि, यह साबित करना असंभव है कि वह ऐसी कहानियों से परिचित भी था। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि लेखक ने ऐसे स्रोतों से उधार लिया है। “ अनुरूपता के जो बिंदु दिखाए जा सकते हैं वे इतने कम और महत्वहीन हैं, कि इनसे यह साबित करना असंभव है कि योना के लेखक ने बुतपरस्त किंवदंतियों का इस्तेमाल किया था या जानते भी

थे। और यदि ऐसी सामग्री से परिचित होना स्पष्ट रूप से साबित नहीं किया जा सकता है, तो ये समानताएं समस्या के समाधान में कैसे योगदान दे सकती हैं, चाहे लेखक का इरादा एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड देने का हो या एक उपदेशात्मक कथा लिखने का?

हैंडआउट पर पृष्ठ 5 के नीचे नोट करें, यहां तक कि अब्राहम कुएनन ने भी कहा कि मछली के चमत्कार की कहानी पूरी तरह से लेखक के धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाती है और इसलिए हमें कुछ विदेशी मूल, विशेष रूप से मिथकों से व्युत्पन्न बताने का कोई अधिकार नहीं है। किंवदंतियाँ जिनमें सहमति के केवल कुछ बिंदु ही दिखाए जा सकते हैं।

रूपक दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ

अब कुछ और विशिष्ट टिप्पणियाँ। इनमें से एक थी गैर-ऐतिहासिक विचारों के कारणों की चर्चा: चमत्कारी। दो, रूपक दृष्टिकोण पर अधिक विशिष्ट टिप्पणियाँ। मुझे लगता है कि रूपक दृष्टिकोण के साथ कठिनाई यह है कि विवरण पर जोर देने पर इसमें कठिनाई आती है। उदाहरण के लिए, योना का खुद को समुद्र में फेंकने के लिए चालक दल से आग्रह करना शायद ही इज़राइल के कैद में जाने पर लागू होता है। कहानी में, मछली योना को मौत में डूबने से बचाने का दैवीय रूप से निर्धारित साधन है, जो कैद पर भी शायद ही लागू होता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि कुछ मामलों में योना को इसराइल का विशिष्ट या प्रतिनिधि माना जा सकता है। मुझे लगता है कि यह काफी संभव है। वास्तव में, मुझे लगता है कि इसे इस तरह से समझना संभवतः सबसे अच्छा होगा। लेकिन यह इस बात को बनाए रखने से बिल्कुल अलग है कि कथा को इज़राइल के रूपक के रूप में डिजाइन किया गया था। योना का एक प्रतिनिधि या विशिष्ट महत्व योना और इज़राइल के बीच कुछ समानताएँ मान लेगा। एक रूपक व्याख्या में एक विस्तृत पत्राचार की अपेक्षा की जा सकती है।

यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम योना की पुस्तक की तुलना पुराने नियम के रूपकों के अन्य उदाहरणों से करते हैं। पुराने नियम में कुछ रूपक हैं। मैं तुम्हें उनमें से दो दूंगा। यहजेकेल 17:2-10 में, यहजेकेल कहता है, “हे मनुष्य के सन्तान, एक रूपक स्थापित कर, और इस्राएल के घराने को एक दृष्टान्त सुना। उनसे कहो, ‘परमेश्वर यहोवा यों कहता है: शक्तिशाली पंखों, लंबे पंखों और

विविध रंगों से भरे पंखों वाला एक बड़ा उकाब लबानोन में आया। उसने एक देवदार की चोटी को पकड़कर उसकी सबसे ऊपरी डाली को तोड़ डाला, और उसे व्यापारियों के देश में ले गया, और वहां से उसने उसे व्यापारियों के नगर में रोप दिया। उसने तुम्हारी भूमि का कुछ बीज लिया और उसे उपजाऊ भूमि में डाला। उस ने उसे विलो की नाई प्रचुर जल के पास बोया, और वह उगकर छोटी, फैलनेवाली लता बन गई। उसकी शाखाएँ तो उसकी ओर मुड़ गईं, परन्तु उसकी जड़ें उसके नीचे ही रह गईं। इस प्रकार वह लता बन गई, और शाखाएं निकलीं, और पत्तेदार शाखाएं निकलीं। लेकिन शक्तिशाली पंखों और पूरे पंखों वाला एक और बड़ा उकाब था। अब बेल ने उस स्थान से जहां वह रोपा गया था, अपनी जड़ें उसकी ओर फैला दीं, और पानी के लिये अपनी शाखाएं उसकी ओर फैला दीं। उसे प्रचुर जल के पास अच्छी भूमि में लगाया गया था, ताकि उस पर शाखाएं निकले, फल लगे और वह एक शानदार लता बन जाए।' उन से कहो, प्रभु यहोवा यों कहता है, क्या वह फलेगा? क्या वह उखाड़कर उसका फल छीन न लिया जाएगा, कि वह सूख जाए? उसकी सारी नई वृद्धि सूख जायेगी। इसे जड़ से उखाड़ने के लिए किसी मजबूत हाथ या बहुत से लोगों की आवश्यकता नहीं होगी। यदि इसे प्रत्यारोपित भी कर दिया जाए तो क्या यह पनपेगा? क्या पूर्वी हवा के झोंके में यह पूरी तरह सूख नहीं जाएगा—जिस भूखंड में यह उगा था, वहीं सूख नहीं जाएगा?"

अब, पद 3 में शक्तिशाली पंखों वाला उकाब नबूकदनेस्सर है, और वह लेबनान से यहूदा के छोटे से देश में आया था। उसने देवदार की चोटी को पकड़कर उसकी सबसे ऊपरी शाखा को तोड़ दिया और उसे अपने साथ ले गया।" वह यहोवाकीन है, जिसे "व्यापारियों के देश में ले जाया गया, जहां उसने इसे व्यापारियों के एक शहर में बसाया," वह बाबुल है। "उसने तुम्हारी भूमि का कुछ बीज लिया और उसे उपजाऊ भूमि में डाला," वह सिदकिय्याह है। "उसने इसे विलो की तरह लगाया... और यह कम फैलने वाली लता बन गई। परन्तु एक और उकाब था, वह मिस्र का फिरौन होफरा था। आगे कहते हुए, " और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से या उनकी बातों से मत डर। यद्यपि तेरे चारों ओर झाड़ियाँ और काँटे हैं, और तू बिच्छुओं के बीच में रहता है, तौभी मत डर। वे जो कुछ कहते हैं, उस से मत डरना, और न उन से घबराना; यद्यपि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं। चाहे वे सुनें या न सुनें, तौभी तुम्हें मेरी बातें उन से कहनी ही पड़ेंगी, क्योंकि वे बलवा करते हैं।"

अब यह इस समय के इतिहास के काफी करीब बैठता है, और जब आप श्लोक 12 में जाते हैं

तो आपको पाठ में ही एक व्याख्या मिलती है। पद 15, "परन्तु राजा ने मिस्र में अपने दूत भेजकर उसके विरुद्ध बलवा किया।" तो व्याख्या वहीं है। इसका परिचय इस कथन से दिया जाता है कि यह एक दृष्टांत है, बताया जाता है, फिर व्याख्या होती है।

यहेजकेल 19 में आपके पास एक और रूपक है। यहेजकेल 19:1, " इस्राएल के हाकिमों के विषय में विलाप का गीत बनाकर कहो: 'तेरी माता सिंहों में कैसी सिंहनी थी! वह जवान सिंहों के बीच में लेटती और अपने बच्चों को पाला। उसने अपने एक बच्चे को पाला, और वह एक बलवन्त सिंह बन गया। "शेर इजराइल लगता है। उसका एक शावक यहोआहाज़ है। "वह एक ताकतवर शेर बन गया। उसने शिकार को फाड़ना सीख लिया और वह मनुष्यों को निगल गया। राष्ट्रों ने उसके विषय में सुना, और वह उनके गड़हे में फँस गया। वे उसे काँटों से पकड़कर मिस्र देश तक ले गए। वह एक प्रार्थना द्वारा लिया गया था। जब उसने अपनी आशा अधूरी देखी, उसकी उम्मीदें खत्म हो गईं, तो उसने अपने एक और शावक को ले लिया और उसे एक मजबूत शेर बना दिया। वह शेरों के बीच घूमता रहा।" वह यहोयाकीन ही प्रतीत होता है। तो हम इसे फिर से 2 किंग्स की किताब में खोज सकते हैं, और फिर उस समय के इतिहास का एक रूपक वर्णन पढ़ सकते हैं।

यदि आप इस तरह के उदाहरणों की तुलना योना की पुस्तक से करते हैं, तो आप जो पाते हैं वह बहुत छोटा है। उनके पास उनके रूपक चरित्र का अचूक संकेत है। आप यहेजकेल 17:19 को पढ़कर यह निष्कर्ष नहीं निकालेंगे कि उकाबों और देवदारों के बारे में जो कहा गया था, उसके शब्दों के अर्थ में यह ऐतिहासिक है। अतः रूपक लक्षण का संकेत मिलता है। योना की पुस्तक में ऐसे संकेत नहीं मिलते हैं, और ऐसा लगता है कि हमारा यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि इसे रूपक अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए।

दृष्टान्त दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ

यह हमें "दृष्टांत" पर लाता है, और आप योना की तुलना पुराने नियम के दृष्टान्तों के उदाहरणों से कर सकते हैं। मुझे लगता है कि आप फिर से पाएंगे कि योना में जो दृष्टांत हैं, वे उससे काफी भिन्न हैं। मैंने तीन को सूचीबद्ध किया है जो दृष्टांत हैं। आप न्यायाधीश 9, 2 शमूएल 12:1-4 में नाथन का दृष्टान्त, और 2 शमूएल 14:6-7 में तकोआ की बुद्धिमान स्त्री का दृष्टान्त देख सकते हैं। यदि आप

उन्हें देखते हैं, तो मैं समय नहीं लगाऊंगा, लेकिन जब आप उन्हें देखते हैं और पढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि दो चीजें सामने आती हैं। ए., वे बहुत छोटे, सरल और नुकीले हैं। मतलब साफ़ है। प्रत्येक मामले में एक बुनियादी बात कही जा रही है। न्यायाधीश 9 अबीमेलक को राजा बनाने की मूर्खता की ओर इशारा करते हैं। 2 शमूएल 12:1- 4, कि दाऊद बतशेबा का दोषी है। 2 शमूएल 14:12-14, दाऊद को अबशालोम को यरूशलेम लौटने की अनुमति देनी चाहिए। और बी., वहां संदर्भ में एक सीधा संकेत है जो इसे बिल्कुल स्पष्ट करता है। डेविड को बताया गया कि यह एक कहानी थी। यदि आप इसकी तुलना योना की पुस्तक से करते हैं, तो योना की पुस्तक की विशेषता न तो एक एकल बिंदु बनाकर और न ही किसी आवेदन के संकेत द्वारा की गई है। और इसके अलावा, इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि कहानी में एक वास्तविक व्यक्ति प्राथमिक व्यक्तित्व क्यों है। मुझे ऐसा लगता है कि ये चीजें संयुक्त रूप से एक परवल्यिक व्याख्या के विरुद्ध तर्क देती हैं।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 43 को देखें जहां डीजे वाइसमैन ने एक लेख में एक बयान दिया था जो *टिडेल बुलेटिन* में है। वह कहते हैं, “ यदि यह एक दृष्टांत है तो यह पुराने नियम के अन्य लोगों की तुलना में अपनी लंबाई और स्पष्टीकरण की कमी में अद्वितीय है और अन्य सभी प्राचीन निकट पूर्वी समानताओं से अनुपस्थित 'चमत्कारी तत्वों' को शामिल करने में अद्वितीय है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है यदि 'दृष्टांत की सार्थकता मानवीय स्थिति को चित्रित करने के रूप में इसकी सत्यता पर निर्भर करती है। ” दूसरे शब्दों में, आप किसी दृष्टांत में चमत्कारी तत्वों को खोजने की उम्मीद नहीं करेंगे। यह दृष्टान्त शैली की विशेषता नहीं है।

पृष्ठ 43 पैराग्राफ 3 एलन की प्रतिक्रिया देता है। वह कहते हैं, " निश्चित रूप से कहानी एक कथात्मक रूप में प्रस्तुत की गई है, लेकिन "सभी दृष्टांत ऐतिहासिक घटनाओं के रिकॉर्ड से मिलते जुलते हैं... योना की पुस्तक के रूप से यह तर्क देना असंभव है कि इसका मतलब ऐतिहासिक घटनाओं का रिकॉर्ड होना चाहिए घटनाएँ।" दूसरे शब्दों में, दृष्टांत रूप ऐतिहासिक रूप के इतने करीब हैं कि आप वास्तव में अंतर नहीं कर सकते।

" एक और कारक जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए वह है 2 किंग्स 14:25 के भविष्यवक्ता के साथ नायक या विरोधी नायक की स्पष्ट रूप से इच्छित पहचान," इसलिए वह योना की किताब के

बाहर भी 2 किंग्स में उल्लिखित योना के इस मुद्दे को संबोधित करते हैं। "यहाँ कम से कम एक ऐतिहासिक आधार है, जो बताता है कि हमारी पुस्तक में संबंधित घटनाएँ ऐतिहासिक हैं।" और फिर वह कहते हैं, "कहानी के पीछे एक ऐतिहासिक केंद्र हो सकता है, लेकिन यह इसके वर्तमान स्वरूप में इसकी समझ के लिए प्रासंगिक नहीं है। अच्छे सामरी (लूका 10:25-37) के दृष्टांत के पीछे 2 इतिहास 28:15 है... डाइव्स और लाजर के दृष्टांत के पीछे रब्बी की कहानी छिपी हो सकती है कि इब्राहीम का प्रबंधक एलीएजेर, जिसका लाजर ग्रीक रूप है, कैसे था अपने नागरिकों के आतिथ्य का परीक्षण करने के लिए सदोम भेजा गया। लेकिन कोई भी इन दृष्टांतों को घटनाओं के सीधे-सीधे वर्णन से अलग करने में असफल नहीं होगा। प्रत्येक मामले में किसी नई और समसामयिक चीज़ के निर्माण के लिए पुराने विषय को कच्चे माल के रूप में उपयोग किया गया है। अब वह कई संघ बनाता है जो कुछ दृष्टांतों के पीछे हैं। इसमें शामिल हों और इस पर चर्चा करें और मुझे लगता है कि आप उनमें से कुछ संघों पर सवाल उठा सकते हैं, लेकिन इसके अलावा वह जो भी उदाहरण देते हैं उनमें से कोई भी दृष्टांत में किसी ज्ञात ऐतिहासिक व्यक्ति के नाम का वर्णन नहीं करता है। जोना की किताब ऐसा करती है, इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि वहां की सादृश्यता, हालांकि दिलचस्प है, वास्तव में वह वजन नहीं रखती है जिसे वह उठाने की कोशिश कर रहा है।

मैं देख रहा हूँ कि मेरा समय समाप्त हो गया है, हमें "सामग्री" नहीं मिल पाई है। तो चलिए यहीं रुकते हैं. अगली बार हमें जोना की सामग्री के बारे में थोड़ी चर्चा करनी होगी और अमोस पर जाना होगा।

रफ टेड हिल्लेब्रांट द्वारा संपादित
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया